

ज्योतिष

कितनी सच्ची ?

कितनी झूठी ?



आर्य संन्यासी

महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

वैदिक मिशनरी



प्रकाशक

मातुश्री धनदेवी केशवराम धर्मार्थ वैदिक द्रस्ट

“धन कुटीर”, १०० भूङ, बरेली, (उ०प्र०)



COLLECTION OF VARIOUS

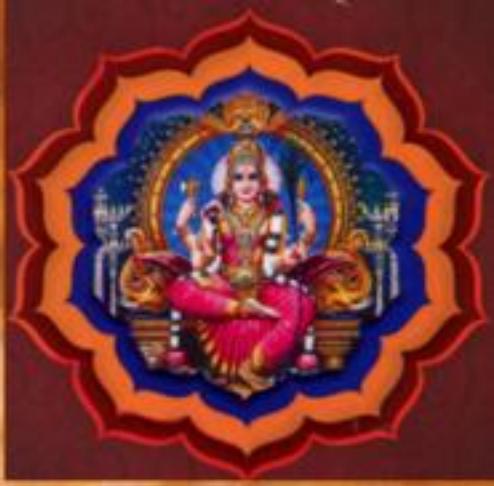
- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

ज्योड्यमा

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठयते ।
 ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥
 शिक्षा धारणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
 तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

—पाणिनीय शिक्षा सूत्र ४१-४२

“मनुष्यैर्वेदार्थं विज्ञानाय व्याकरणाष्टाध्यायी
 महाभाष्याध्यनम् । ततो निघण्टु निरुक्त छन्दो
 ज्योतिषां वेदाङ्गानाम् ।”

—महर्षि दयानन्द सरस्वती
 (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से)

“दो वर्ष ज्योतिषशास्त्र सूर्य सिद्धान्तादि जिसमें बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है, उसको यथावत सीखे । तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तशिल्प यन्त्रकला आदि को सीखे । परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठ समझ के न पढ़े और न पढ़ावे ।”

—महर्षि दयानन्द सरस्वती
 (सत्यार्थप्रकाश-तृतीय समुल्लास)



ज्योतिष—कितनी सच्ची ?

समस्त मानवों के हितार्थ ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, विज्ञान और ब्रह्मज्ञान का नाम है—“वेद”। शारीरिक सुख के लिये ज्ञान, विज्ञान, (जिसमें सृष्टि विद्या और पदार्थ विद्या सहित समस्त सत्य विद्यायें आ जाती हैं) तथा आत्मिक आनन्द के लिये ब्रह्मज्ञान की आवश्यकता प्रत्येक मानव अनुभव करता है, उसकी पूर्ति करता है वेद। वेद में जो कुछ है, वह सत्य है, निर्भम और निर्भान्त है तथा समस्त मानवों के लिये कल्याणकारी है।

इन्हीं वेदों को सही रूप में समझने और समझाने के लिये, वेदेतर ऋषियों ने परोपकार की भावना से वेदार्थ के सही परिज्ञान के लिए जिन सहायक ग्रन्थों का सृजन किया, वे कहलाये “वेदांग”। विषायनुसार इनके नाम रखे गये—‘शिक्षा’, ‘कल्प’, ‘व्याकरण’, ‘निरुक्त’, ‘छन्द’ और ‘ज्योतिष’।

इस ज्योतिष का अधिकार-क्षेत्र और उद्देश्य भी ‘वेद’ से निर्धारित था। वेद^१ के अनुसार ज्योतिष के अधिकार-क्षेत्र में आते हैं, नक्षत्र, उपग्रह, दिन, रात्रि, पक्ष, मास, ऋतुयें, ऋतु-जन्य परिवर्तन, संवत्सर, द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, चन्द्रमा, सूर्य, इनकी रश्मयाँ, ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, मरुत (१० प्राण, वायु, पवन, आदि) का उत्तम और यज्ञीय सुष्टु क्रियाओं द्वारा उचित सम्प्रयोग, जिससे विश्व के देव-देवीयों (आप्त स्त्री-पुरुषों), मूल और शाखाओं, वनस्पतियों, फूलों, फलों और औषधियों के गुणों में वृद्धि हो तथा वे शुद्ध, पवित्र और यज्ञीय (श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी) सुहुत हों।

१. नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहाऽऋतुभ्यः स्वाहात्तर्वेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याद्यस्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रुश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्ध्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहोषधीभ्यः स्वाहा॥। —यजुर्वेद २२.२८

प्राचीन वेदाध्ययन परिपाटी के अनुसार अध्ययन-रत व्यक्ति जब 'शिक्षा', 'कल्प', 'निरुक्त' और 'छन्द' शास्त्रों में निपुण हो जाता था, तब वेद में वर्णित सृष्टि विज्ञान, ब्रह्माण्ड के रहस्यों, सूर्य, चन्द्रमा, पृथिवी, अन्तरिक्ष, अग्नि, वायु के गुणों और उनके समुचित सम्प्रयोगों के लिये "चक्षु" रूपी 'ज्योतिष' का अध्ययन करता था। साक्षात्कार से ही विश्वास होता है (Seeing is believing) इसी उक्ति के कारण 'ज्योतिष' को 'चक्षु' कहा गया। "ज्योतिषामयनं चक्षु"।

आत्मा की महत्ता को समझने के लिए जैसे इस पिण्ड की गतिविधियों को समझना आवश्यक है, वैसे ही ब्रह्म को समझने के लिए ब्रह्माण्ड की गतिविधियों को समझना आवश्यक समझा गया। अतएव ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्ड की परिधि, सौर मंडल, उल्का, आकाश गंगा, प्रकाश, प्रकाश की गति, संवत्सर, परिवत्सर, इदवत्सर आदि वर्ष तथा उनके आधार पर युगों, मन्वन्तरों की गणना, काल-दर्शिका यथा वार, तिथि, नक्षत्र, करण, योग आदि का निर्धारण, चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, सौर वर्ष, चान्द्र वर्ष, ऋतु, मास, अयन अर्थात् उत्तरायण व दक्षिणायण का निश्चय करने के लिए ज्योतिष का अध्ययन किया जाता था। नित्यकर्मों (जिनमें पंच महायज्ञ आ जाते हैं) के सम्पादन के लिये प्रतिदिन सूर्योदय और सूर्यास्त का समय का निश्चय भी ज्योतिष के आधार पर होता था, जो आज भी जारी है।

वैदिक परिपाटी के अनुसार, चूंकि काल के आश्रय से ही यज्ञों (श्रेष्ठतम कर्मों) का निष्पादन होता था^१, अतः जो ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता होता था, वही यज्ञ के ब्रह्मा (निदेशक) होने का अधिकारी होता था। तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्।

—वेदांग ज्योतिष, श्लोक ३

इस प्राचीन ज्योतिष का आधार था 'वेद', तथा वेदेतर ब्राह्मण ग्रन्थ, सिद्धान्त ग्रन्थ (जिसमें प्रमुख हैं 'सूर्य सिद्धान्त' तथा समय-समय पर विद्वानों द्वारा इसके आश्रय से की गई टीकायें) गणित शास्त्र, जिसमें 'अंक गणित', 'बीजगणित', 'रेखागणित', 'त्रिकोणमिति', 'ज्यामिति', 'सांख्यीकी' आदि सभी गणित की विधायें

१. ज्योतिष की दृष्टि से दैनिक अग्निहोत्र ठीक सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय होना चाहिए।

शामिल थीं। गणित की अंगभूत 'दशमल्लव पद्धति' इसी प्राचीन ज्योतिष की देन है। महर्षि सूर्य, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, मरीचि, मनु, अंगिरा, गर्ग, लोमश, शौनक, पुलस्त्य, लगध, मुंजाल, श्रीपति, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य आदि ज्योतिर्विदों की गणना आज भी प्राचीन ज्योतिष के मूर्धन्य विद्वानों में होती है। गणित से युक्त होने के कारण प्राचीन ज्योतिष का विकास 'यथार्थ विज्ञान' (Exact Science) के रूप में हुआ, जो वेदांग के रूप में ज्योतिष की महती उपलब्धि थी।

वर्तमान परिवेश में हम कह सकते हैं कि आज जो कुछ भी 'खगोल विद्या (Astronomy), 'मौसम विज्ञान' (Meteorology) और भूगर्भ विज्ञान (Geology) के रूप में उपलब्ध है, उन सबका मूल वेद-वेदांग द्वारा प्रतिपादित यह प्राचीन ज्योतिष है।

समस्त ब्रह्माण्ड और सौर मंडल का अधिपति है सूर्य। वेदों में सूर्य-सम्बन्धी अनेक मन्त्र हैं, जैसे—

"सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुष्टश्च स्वाहा।"

—यजुः० ७.४२

"वण्महाँ असि सूर्य, बलादित्य मुहाँ असि।"

—ऋ० ८.१०१.११

"बृहद्द तस्थौ भुवनेष्वन्तः पर्वमानो हुरितु आ विवेश।"

—ऋ० ८.१०१.१४

अर्थात् सूर्य स्थावर और जंगम सब जगत की आत्मा है। बलवान सूर्य अत्यन्त महान, ऊर्जायुक्त और बड़ा है। सबके मध्य में स्थित है। समस्त पिण्ड उसी की परिक्रमा करते हैं। इन परिक्रमा करने वाले पिण्डों को ग्रह कहते हैं। पृथ्वी उन नौ ग्रहों में से एक है, जो सूर्य की परिक्रमा करती है। यह नौ ग्रह हैं—बुध, शुक्र, पृथिवी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण (यूरेनस), वरुण (नैप्च्यून), और पीत ग्रह (प्लूटो)। चन्द्रमा चूंकि पृथिवी की परिक्रमा करता है, अतः उपग्रह माना जाता है यद्यपि कुछ प्राचीन ग्रन्थों में इसको ग्रह भी माना गया है। लगभग ३० उपग्रह, क्षुद्रग्रह तथा धूमकेतु जैसे आकाशीय पिण्ड एवं सभी अन्य ग्रह सूर्य सहित बनाते हैं, हमारा सौर मण्डल या सौर परिवार। इस सौर परिवार में नवग्रहों की स्थिति कुछ इस प्रकार है—



सौर परिवार में नव ग्रहों की स्थिति

इस सौर परिवार में केवल पृथिवी पर ही वे सारी स्थितियाँ हैं, जो प्राणी के जीवन-यापन हेतु आवश्यक हैं। इसीलिए वेद में आया—

“माता भूमि: पुत्रोऽहुं पृथिव्या ।”

—अथर्व० १२.१.१२

भूमि मेरी माता है और मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। अन्य समस्त ग्रह, जल तथा वायुमंडल से हीन हैं, तथा सूर्य से बहुत दूर होने के कारण एकदम ठण्डे हैं। सिवाय अपने अक्ष पर घूमने के, वे सर्वथा निष्क्रिय हैं। कुछेक ग्रहों की गति भी पृथिवी की गति की तुलना में बहुत धीमी है। जो ग्रह सूर्य के समीप हैं, उनकी जो सतह सूर्य की ओर होती है, अधिकतम प्रकाश और ऊष्मा ग्रहण करती है, अतः इनका एक भाग बहुत गर्म और प्रकाशयुक्त रहता है, शेष बिल्कुल ठण्डा।

“वर्षेण भूमि: पृथिवी वृत्तावृत्ता ।”

—अथर्व० १२.१.५२

पृथिवी अपनी परिक्रमा वर्ष भर में पूरी करती है उस समय इसकी सीध में अनेक तारापुंज पड़ते हैं, जिन्हें राशि कहते हैं। इनके नामकरण, इनकी आकृति जैसी दीखती है, उस पर किये गये हैं; जैसे मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। इन बारह राशियों का महत्व केवल खगोल विद्या में है, क्योंकि इनकी सहायता से ब्रह्माण्ड में अन्य तारागण की

स्थिति को समझा जा सकता है। पृथिवी के परिक्रमा पथ (क्रान्तिवृत्त) की सीध में पढ़ने से आकाश मण्डल के इस वृत्त को “राशिचक्र” कहते हैं, जिसमें लगभग १०१६ नक्षत्र (न दूटनेवाले तारागण) हैं। अथर्ववेद के नक्षत्र सूक्त (काण्ड १९, सूक्त ७ तथा ८) के अनुसार प्रसिद्ध नक्षत्र २८ हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा एवं उत्तरा फाल्गुनी, हस्त चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, अभिजित, श्रवण, श्रविष्ठा, शतभिषग, पूर्वा प्रोष्ठपदा, उत्तरा प्रोष्ठपदा, रेवती, अश्विनी एवं भरणी।

यानि नक्षत्राणि दिव्यं नक्षत्रिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयं शुन्द्रम् यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु॥

—अथर्व० १९.८.१

यह (सर्वाणि) सब (नक्षत्राणि) नक्षत्र (शिवानि) कल्याणकारी एवं सुखकारी ही हैं।

सूर्य भी गतिशील है। यह अपनी धुरी पर घूमता हुआ “आकाशगंगा” (Galaxy or Milky Way) के केन्द्र की परिक्रमा करता है। इसके साथ अन्य ग्रह भी सूर्य की दीर्घ वृत्ताकार परिधि में परिक्रमा करते रहते हैं। “आकाशगंगा में १ खरब ५० अरब सितारे हैं। ऐसी असंख्य आकाश गंगायें ब्रह्माण्ड में हैं। अपने सौर परिवार सहित सूर्य लगभग २४० कि०मी० प्रति सेकेन्ड की गति से ज्ञात आकाशगंगा के केन्द्र की परिक्रमा करता है।” इस केन्द्र विन्दु के चारों ओर एक चक्र पूरा करने में २५ करोड़ वर्ष लगते हैं।

यद्यपि पृथिवी अपनी कक्षा में घूमती हुई सूर्य की प्रदक्षिणा करती है, परन्तु प्रतीत ऐसा होता है, कि सूर्य ही १२ राशियों में संक्रमण करता है। पृथिवी की गति के ठीक विपरीत दशा में सूर्य की गति प्रतीत होती है। पृथिवी जिस राशि में हो, उससे सप्तम राशि में सूर्य होता है।

पृथिवी एक वर्ष में प्रत्येक राशि की सीध से गुजरती हुई अपने पूर्व स्थान पर आ जाती है। वर्ष को सूर्य की गति के आधार पर १२ मास और ६ ऋतुओं में वर्गीकृत किया गया है, जिनके नाम वेदानुसार इस प्रकार हैं—

<u>ऋतु</u>	<u>मासों के नाम</u>	<u>(वेदानुसार)</u>
बसन्त	मधु, माधव	(यजुर्वेद १३.२५)
ग्रीष्म	शुक्र, शुचि	(यजुर्वेद १४.६)
वर्षा	नभ, नभस्य	(यजुर्वेद १४.१५)
शरद्	इष, ऊर्ज	(यजुर्वेद १४.१६)
हेमन्त	सह, सहस्य	(यजुर्वेद १४.२७)
शिशिर	तप, तपस्य	(यजुर्वेद १५.५७)

शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म ऋतु में सूर्य उत्तरायण होता है, और वर्षा, शरद तथा हेमन्त में दक्षिणायन।

ब्रह्माण्ड में सारी व्यवस्था का नियामक परमेश्वर है। ग्रह, उपग्रह, सितारे आदि सब जड़ हैं, इनका गति प्रदाता परमात्मा है। ग्रहों और उपग्रहों के गति करते हुये जो भाग पृथिवी के सामने आ जाता है, वह उनी आकर्षण शक्ति से पृथिवी के उस भू-भाग को अवश्य प्रभावित करता है, पर उन सबका किसी व्यक्ति विशेष के सुख-दुःख, हानि-लाभ, से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनका प्रभाव उस भू-भाग के निवासियों पर ऐसा ही पड़ता है, जैसा ऋतुओं का। सर्दी-गरमी किसी एक को नहीं प्रभावित करती, वरन् उस स्थान पर रहने वाले सभी लोगों को एक जैसा ही प्रभावित करती है। समस्त ग्रह-उपग्रह सौर परिवार के सदस्य हैं और व्यवस्था से ईश्वर के आधीन हैं। उनमें परस्पर सह-अस्तित्व तो है, मित्रता, शत्रुता नहीं। कोई किसी से न टकराता है, न लड़ता है, न भिड़ता है, न अतिक्रमण करता है। ईश्वर ने जिसकी जो कक्षा निर्धारित कर दी है, उसी में वे अरबों वर्षों से घूम रहे हैं बिना रुके, बिना भटके, और चलते रहना है, क्योंकि यही उनका धर्म है, और यही है उनका कर्म। काश ! हम पृथिवीवासी मानव उनसे कोई शिक्षा ले पाते।

ज्योतिष—कितनी झूठी ?

जिन लोगों ने सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार ईश्वर को देवी, देवताओं के रूप में साकार बनाकर, फिर उसकी मूर्तियाँ बनाकर मन्दिरों में क्रैद कर दिया, वे भला ग्रहों और उपग्रहों को कैसे छोड़ सकते थे। पृथिवी के भार से कुछ कम या अधिक भारी ग्रह अब प्रत्येक मनुष्य के ऊपर बिराजते हैं। कोई ग्रह अन्य ग्रह को मित्र भाव से देखता है और कोई शत्रु भाव से। कोई-कोई आतंकवादी बलवान

ग्रह अपना प्रकोप वा शक्ति दिखाने लग जाता है, और परेशान होता है बेचारा इन ग्रहों के भार को ढोने वाला।

महाभारत काल के पश्चात जो दुर्दशा ईश्वर और धर्म की हुई, वही ज्योतिष की हुई। 'ज्योतिष' शब्द भविष्य में होने वाली बात के ज्ञान के लिये रूढ़ हो गया। यह ज्योतिष का दुर्भाग्य ही कहा जायगा जब इसमें हजार-पाँच सौ वर्ष पूर्व 'जातक', 'ताजिक', 'मुहूर्त', 'प्रश्न', 'शकुन', 'अपशकुन', 'दिशाशूल', हाथ-पैर की रेखाओं, तिलों तथा विविध बातों के शुभाशुभ फल लोभी पण्डितों द्वारा जोड़ दिये गये। ग्रहों, उपग्रहों के नाम ले-लेकर, व्यक्ति-व्यक्ति में भविष्य के प्रति पहले भय, भ्रान्ति, आशंका पैदा करना, फिर उसके निराकरण के लिये उपाय प्रस्तावित करना, तदुपरान्त अनुष्ठान करवाना कुछ लोगों का व्यवसाय बन गया। जैसे, जिनको केवल घण्टा, घड़ियाल और शंख बजाना आता था, जो पढ़ाई के नाम पर शून्य थे; वे मन्दिरों के पुजारी बन गये, उसी प्रकार मामूली शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जो शारीरिक श्रम नहीं करना चाहते थे, जंत्रियों तथा पत्र-पत्रिकाओं के सहारे से, दूसरों के भविष्य को बताने और बनाने वाले बन गये। प्राचीन काल में संस्कृतज्ञ, वेद-वेदांग और दर्शन शास्त्रों के विद्वान् ही ब्रह्माण्ड के रहस्यों का साक्षात्कार करने के लिये ज्योतिष में प्रवृत्त होते थे; अब वे लोग, जिनके पास करने को कोई कार्य नहीं है, ज्योतिष से व्यवसाय के रूप में धनोपार्जन के लिये प्रवृत्त होते हैं, और तो और, झोला-छाप व्यक्ति, पक्षियों (तोता, मैना, चिड़ियों) तथा पशुओं (बन्दर, भालू) द्वारा गारण्टी की भविष्यवाणी करते हैं। अज्ञान, अविद्या और अंधविश्वास से ग्रस्त मानव समाज की हर समस्या (जैसे बीमारी, शादी, सन्तान, मुकदमा, रोज़गार, सद्वा, व्यापार, शत्रु को हानि पहुँचाना, परीक्षा में सफलता, आदि) का समाधान इन ज्योतिषियों के पास है, अतः धन्धा खूब पनप रहा है। इसी बावरी दुनियां के ऐसे लोगों के लिये ही दाद सन्त ने कहा था—

दाद दुनियाँ बावरी, मढ़िया॑ पूजन जाय।

जो आप निपूते मर गये, तेतों पुत्तर मंगन जाय॥

कोई नहीं सोचना चाहता, कि जो व्यक्ति अपना भविष्य नहीं बना सका, वह ज्योतिषी बनकर मात्र कलाकारी से दूसरों का भविष्य

कैसे संवार देगा ?

जी हाँ, ज्योतिष अब न विद्या है, न विज्ञान। यह एक कला बनकर रह गई है। जो जितनी ज्यादा कलाकारी दिखावे, और अपने चमचों/भक्तों/प्रशंसकों द्वारा जितनी अधिक विज्ञापनबाजी (Publicity) कर ले वा करवा ले, वह उतना ही बड़ा ज्योतिषी। कलाकार जो कुछ भी मंच पर या पर्दे पर दर्शकों के लिये करता है, उसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसी प्रकार आज जो भी ज्योतिष के नाम पर राशिफल, भविष्य का पूर्वानुमान, वशीकरण, मारन, ताड़न, ग्रहों के शमन के लिये यंत्र-मंत्र-तंत्र-पत्थर आदि दिये जा रहे हैं, वह सब मिथ्या, पाखण्ड और झूठ है। ज्योतिष आज यथार्थ विज्ञान (Exact Science) से गिरकर संभाव्यता सिद्धान्त (Theory of Probability) पर आश्रित हो गई है। फलित ज्योतिष में सबसे बड़ी कला है, द्वि-अर्थी बात कहना, जिससे ज्योतिषी जी की 'चित्त भी मेरी' और 'पट्ट भी मेरी' स्थिति बरावर बनी रहे।

'घुणक्षरन्याय' और 'स्वभावित सम्बन्ध जन्य ज्ञान' के आधार पर यदि ज्योतिषी जी की बताई कोई बात परिस्थितिवश सही भी हो जावे, तो उसको अधिक महत्व देना न्यायोचित न होगा, क्योंकि ५० प्रतिशत अनुमान, यदि अनुभवों पर आधारित हैं तो हरेक व्यक्ति के (चाहे वह ज्योतिषी हो, या न हो) सही ही सिद्ध होंगे। यही संभाव्यता सिद्धान्त (Theory of Probability) है।

आइये, सत्य को जानें

सत्य यह है, कि—

१. ज्योतिषी कितना भी बड़ा क्यों न हो, मनुष्य है, ईश्वर नहीं। अल्पज्ञ है, सर्वज्ञ नहीं। किसी भी ज्योतिषी के पास ईश्वर से प्राप्त यह अधिकार पत्र नहीं है कि वह ईश्वरीय व्यवस्था में स्वेच्छा से किसी के लिये हस्तक्षेप कर सकता है, या ईश्वर को अपनी सिफारिश मनवाने के लिये बाध्य कर सकता है।

२. आजकल के ज्योतिषी अपने आपको किसी देवता (कालभैरव, शिवजी, गणेशजी, हनुमानजी) या देवी माता (दुर्गा, चामुण्डा, आदि) या किसी पीर, फ़कीर का भक्त घोषित करते हैं, और उनके चित्र छापकर, शिव स्तोत्र, हनुमान चालीसा, दुर्गा सप्तशती, आरतियों की पुस्तकें बांटकर उनकी पूजा, आदि का ढोंग करते हैं। यह देवी, देवता, पीर, फ़कीर इस युग में आज तक किसी की मदद को आये हैं क्या,

जो अब आकर के ज्योतिषी जी के ग्राहक का काम बनवा देंगे ?
मनगढ़न्त कथा कहानियों के वाचन से कार्य सिद्ध नहीं हुआ करते ।

३. देवी, देवताओं, पीर, फ़कीर से भी ऊपर एक परमेश्वर है,
जो सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु,
अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर,
सर्व-व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, नित्य, पवित्र, सृष्टि का
जनिता और कर्मफल विधाता है । प्राणीमात्र का हितैषी, मित्र और सखा
है । अकारण किसी को दुःख देना उसका स्वभाव ही नहीं है । सुख,
दुःख, हानि, लाभ, जय, पराजय आदि सब मनुष्य के शुभ-अशुभ
कर्मों, अकर्मों और विकर्मों के फल हैं, ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों के नहीं ।

४. प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल ईश्वरीय न्याय
व्यवस्था के अनुरूप भोगना ही पड़ता है, इससे न कोई बच सकता है,
और न कोई (ज्योतिषी, पुजारि, तान्त्रिक) बचा सकता है । उक्ति है—

कोई लाख करे चतुराई,
करम का लेख मिटे न रे भाई ॥

ईश्वर की कल्याणी वाणी वेद की भी स्पष्टोक्ति है—

न किल्बिष्मत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रः सुमर्ममान् एति ।
अनूनं पात्रं निहितं न एुतत्पक्तारं प्रक्वः पुनुरा विशाति ॥

—अर्थवर्वेद १२.३.४८

इस कर्मफल में कुछ भी न्यूनाधिक नहीं होता । न ही कोई
(आधार) सिफारिश चलती है । न यह, कि किसी मित्र (पण्डित,
पुजारी, ज्योतिषी, तान्त्रिक) के साथ गति की जा सके । हमारा यह
कर्मों का पात्र, जैसा और जितना हमने भरा है, बिना घट-बढ़ के ही
रहता है । अपना पकाया हुआ ही पकानेवाले को पुनः आ मिलता है ।

५. जो होना है, सो होकर रहेगा । जो नहीं होना है, वह कभी
नहीं होगा । दुनिया के सारे ज्योतिषी और तान्त्रिक मिल करके भी
होनी को अनहोनी में और अनहोनी को होनी में नहीं बदल सकते ।
शारीरिक और मानसिक रोग, यदि ठीक होने हैं, तो सही औषधि के
सेवन व सही उपचार से । झाड़, फूंक, डोरा, ताबीज, टोने, टोटकों,
भूत और क्रीमती पत्थरों के धारण करने से नहीं । ज्योतिषी द्वारा
दिया गया मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सब पाखण्ड और लोगों को मूर्ख बनाने
की एक विधा है ।

६. वेद मन्त्रों का लाभ भी उनके अर्थ समझकर तदानुकूल

स्वयं आचरण करने से होता है। दक्षिणा देकर दूसरों से मन्त्रों का पाठ या जाप करा लेना निष्फल होता है। महामृत्युञ्जय मन्त्र वा गायत्री मन्त्र हर मर्ज की दवा नहीं हैं। वे जीते जी साधना करने के मन्त्र हैं। उनका फल भी केवल निष्ठावान् साधक को प्राप्त होता है; तोते की तरह रटने या जाप करनेवाले व्यक्ति को नहीं।

७. ग्रह, उपग्रह सब जड़ हैं। इनको गति ईश्वर ने प्रदान की है। 'योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः' (यजु:० ३२.६) समस्त ग्रह अपने-अपने अक्ष (धुरी) पर अपनी-अपनी कक्षा में घूमते हैं। वे किसी के ऊपर न कहीं आते जाते हैं। शनि ग्रह ने आज तक किसी का कभी भी बुरा नहीं किया है। पृथिवी से वैसे भी यह ग्रह बहुत दूर है। ज्योतिषियों ने लोगों में भय आशंका पैदा करने के लिये इसको मोहरा बना रखा है। नौ ग्रहों में राहू केतु तो हैं ही नहीं, वे किसी का क्या बुरा करेंगे। उनसे जुड़ी कथायें सब काल्पनिक हैं। उनमें कुछ भी सत्य नहीं है।

८. नव-जात शिशु के जन्म के समय, तिथि, वार, नक्षत्र का विवरण रखना ठीक और उचित ही है। पर इसे दे दीजिये फ़ीस के साथ किसी ज्योतिषी को। इसको वह 'चिन्ता-पत्री' या 'शोकपत्री' में न बदल दे, तो ज्योतिषी ही क्या? कोई न कोई ग्रह नेष्ट, वक्री या क्रूर किसी न किसी के लिये निकल ही आवेंगे। अब जन्मपत्री बनाने में कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है, अतः ग़लती की भी सम्भावना नहीं है। ज्योतिषी जी के पौ बारह हैं। जो-जो उपाय वे बताते जावें, करवाते जाइये; यानी धन देते जाइये। करने-कराने को ज्योतिषी जी के साथ पंडित जी भी मौजूद हैं। वे सब कर देंगे। आपको कुछ नहीं करना है सिवाय अपनी जेब हल्की करने के। किसी भी ज्योतिष केन्द्र पर जाकर आप धन व्यय करके इस कथन की सत्यता को परख सकते हैं।

९. कोई भी ग्रह न क्रूर है, न वक्री है, और न नेष्ट है। यह धरती जिस पर हम आप रहे हैं, एक ग्रह है, ऐसे ही अन्य ग्रह हैं, अन्तर इतना है कि उन पर जल तथा वायु मण्डल तक नहीं है। मनुष्यों की सारी मुसीबतों का दोष इन मूक ग्रहों के माथे मढ़ देना कहाँ का न्याय है? कृपया सोचें!

१०. मनुष्य संसार से हाथ पसारे जाता ज़रूर है, पर परमात्मा की दयालुता से संसार में आता है मुट्ठी बांधे। इस बन्द मुट्ठी में हर जन्म लेने वाला प्राणी अपना भाग्य साथ लाता है। उक्ति है—

“बन्द मुद्री लाख की, खुल गई तो खाक की।”

यह ज्योतिषी और हस्त रेखा विशेषज्ञ ही मुद्री खुलवा-खुलवा कर हम-आपको खाक में मिला देते हैं। इस कुकर्म का दण्ड ईश्वर ही इनको देगा; हमारा आपका सामर्थ्य कहाँ।

११. मूल नक्षत्र में पैदा हुये शिशु के विषय में बड़ी भ्रान्तियाँ इन ज्योतिषियों ने फैला रखी हैं। ‘मूल’ नक्षत्र प्रमुख नक्षत्रों में से एक है। पर इन ज्योतिषियों ने फलित ज्योतिष की पुस्तकों के आधार पर छह नक्षत्रों को ‘मूल’ नक्षत्र माना हुआ है, यह है—अश्वनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती। इन ज्योतिषियों की बुद्धि का कमाल देखें—अश्वनी और रेवती नक्षत्र विवाह के लिए शुभ हैं, परन्तु इनमें यदि सन्तान का जन्म हो, तो यह पिता, माता, वंश के लिए अशुभ हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण के आधार पर, हर चरण में जन्मे बालक के अलग-अलग अशुभ फल हैं। अब नवजात शिशु के मुँह को देखे विना ज्योतिषी जी के बताये अनुसार, पण्डित जी से ४० दिन तक मूल शान्ति के उपाय करवाइये। यदि सौभाग्य से सन्तान का जन्म मूल नक्षत्रों में न हुआ हो, तो ज्योतिषी जी की पत्रा में अनेक योग हैं, जैसे संक्रान्ति व्यातिपात, वैघृति, अमावस्या, वज्रयोग, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, यमघट, दग्धयोग, भद्रा, मृत्युयोग, जिसमें ज्योतिषी जी के अनुसार शान्ति अनुष्ठान करवाना ज़रूरी है; वरना ज्योतिषी जी के पास आशंकाओं की कमी नहीं है। सोचिये, इन योगों और नक्षत्रों में पूरे विश्व में बच्चे जन्मते हैं। रूस, चीन, जापान, अमरीका, योरूप आदि मुस्लिम देशों में जन्मे बच्चों पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता! केवल हिन्दुओं के या हिन्दू मूल के नवजात शिशु ही प्रभावित होते हैं? आखिर क्यों? इसलिए कि अज्ञान, अन्धकार और अन्धविश्वास में रहने की हम हिन्दुओं को आदत पड़ गई है। सत्य यह है कि मूल नक्षत्र में पैदा हुआ बालक दृढ़ व्रती और अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है। (**स्वाइकृतोऽसि—यजुः० ७.६**)।

१२. जाति, आयु और भोग परमात्मा से कर्मफल (विपाक) के रूप में प्रत्येक प्राणी को प्राप्त होते हैं। मृत्यु एक भोग है, कर्म नहीं। किसी को जान से मार देना एक कर्म हो सकता है, जिसको करने में मनुष्य स्वतन्त्र है। परन्तु जिसको मारने की चेष्टा की गई है, उसकी मृत्यु हो ही जावेगी, यह मारनेवाले के हाथ में नहीं। यदि मृत्यु नहीं बदी है, तो मरनेवाला मरते-मरते भी बच जाएगा। बचानेवाला ईश्वर

है, क्योंकि समय से पूर्व किसी को दी हुई आयु से वज्ज्वत कर देना ईश्वरीय न्याय नहीं। जाति, आयु और भोग प्रारब्ध के रूप में पूर्व कर्मों के आधार पर प्राप्त होते हैं। “सति मूले तद विपाको जाति-आयु-भोगः” (योगदर्शन २.१३) इनको भोगना निश्चित है, इनको न टाला जा सकता है, और न इनमें कोई कमी-बेशी किसी के द्वारा हो सकती है। भोगों में सुख और दुःख दोनों ही शामिल हैं। जो सुख वा दुःख मुझे इस जन्म में भोगने हैं, वे भोगने ही हैं, और उनको भोगने के लिए जितनी आयु मुझे चाहिए वह मुझे निश्चित श्वासों के रूप में मिली हुई है। यदि इस आधार पर मेरी मृत्यु, शिशु-अवस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था या वृद्धावस्था जिस अवस्था में भी निश्चित है, उसी में होके रहेगी। कोई ज्योतिषी, तात्त्विक, पण्डित, पुजारी मेरी मृत्यु को न टलवा सकता है, और न रोक सकता है, और न समय से पूर्व मुझे मृत्युलोक पहुँचा सकता है। यही सत्य है, बाकी सब घपला है।

१३. ज्योतिषियों के दो प्रमुख कार्य हैं—

- (i) शुभ और मांगलिक कार्यों के लिए मुहूर्त निकालना, और
- (ii) विवाह हेतु प्रस्तावित वर-कन्या की जन्म पत्रियों का मिलान करना। दोनों ही कार्य बहुत बड़ा धोखा (Fraud) हैं।

सत्य यह है कि शुभ कार्य वे होते हैं, जिनको करने में किसी प्रकार का भय, शंका और लज्जा न हो, तथा जिनको करने से मन में उल्लास और उत्साह उत्पन्न हो। कार्यों को करने के विषय में स्वर्णिम सूत्र यह है कि—

शुभ कार्य को टाले नहीं कभी।

और बुरे कार्य को, जैसे हो,
जल्दी कर डाले नहीं कभी॥

शुभ कार्य के लिये हर वह समय, जिसमें सबकी सुविधा और प्रसन्नता हो, अत्यन्त उत्तम है। विवाह के विषय में भी प्राचीन ऋषियों का मत है कि उत्तरायण शुक्ल पक्ष में जिस दिन प्रसन्नता हो उस दिन मास व नक्षत्र कोई भी हो, विवाह कर लेना चाहिये। विवाह संस्कार भी गोधूलि बेला में आरम्भ करके रात्रि के प्रथम प्रहर तक समाप्त हो जाना चाहिये। देर रात के विवाह पैशाचिक विवाह कहाते हैं।

१४. अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि पति-पत्नी का सुखी

दाम्पत्य जीवन जन्मपत्री के मिलान पर नहीं, अपितु उनके विचार, गुण, कर्म, स्वभाव के मिलान (समानता) पर निर्भर करता है। अतः उचित यही है कि वर कन्या स्वयं ही, या अपने मित्रों द्वारा अथवा माता-पिता वा अन्य रिश्तेदारों द्वारा एक दूसरे के विचार, गुण, कर्म, स्वभाव को जानने, परखने का यत्न करें, और फिर उनका मिलान करें। विवाह शरीरों का नहीं, दो आत्माओं का प्रेम-मिलन है, अतः जब तक अन्तरात्मा प्रेरित न करे, तब तक विवाह सम्बन्ध को सहमति न दें। और किसी दबाव के वशीभूत होकर या पंडित जी/ज्योतिषी जी की बातों में आकर विवाह की स्वीकृति कभी भी न दें।

१५. विवाह सम्बन्ध में जो बातें ध्यान में रखने यग्य हैं, वे इस प्रकार हैं—

- (i) कन्या वर की माता की छह पीढ़ियों में से न हो और वर के पिता के गोत्र की न हो। अन्तर्जातीय और अन्तर्देशीय विवाहों में माता-पिता के गोत्र आदि की समस्या ही नहीं रहती।
- (ii) वर-कन्या के कुल में कोई भी संक्रामक या आनुवंशिक शारीरिक या मानसिक रोगों से ग्रस्त न हो।
- (iii) वर-कन्या सुन्दर और सार्थक नाम गुण वाले हों, और देखने में दोनों ऐसे प्रतीत हों, मानों विधाता ने उनको एक दूसरे के लिए ही रचा हो।
- (iv) मंगली लड़की वा मंगली लड़के (अर्थात् वे जिनकी कुण्डली में ज्योतिषी जी के अनुसार १, ४, ७, ८ या १२वें घर में मंगल हो) का विवाह गुण-कर्म-स्वभाव का मिलान करके कहीं भी कर दीजिये, कुछ नहीं बिगड़ेगा। मंगली लोग न किसी का अमंगल सोचते हैं, न किसी का अमंगल करते हैं। वह पति भाग्यशाली है जिसकी पत्नी मंगली हो, और वह पत्नी भाग्यशालिनी है, जिसका पति मंगली हो।
- (v) दम्पति में किसी एक का विधुर या विधवा हो जाने का सम्बन्ध उनकी आयु तथा भोग से है। पुरानी पीढ़ी के कितने ही ऐसे विधुर या विधवाएँ मिलेंगे/मिलेंगी, जिनके सम्बन्ध उनके अभिभावकों ने बाकायदा जन्मपत्री को मिलवाकर किये थे, परन्तु फिर भी वे एकाकी अपनी आयु को भोग रहे हैं। बस स्मृतियाँ ही उनकी सम्पत्ति हैं। वे पण्डित और ज्योतिषी भी अब जीवित नहीं हैं, जिनसे जाकर कह सकें कि आपने कैसी जन्मपत्री हमारी मिलाई थी? ऐसे लोगों के अनुभव से शिक्षा लेकर ज्योतिष का पाखण्ड सर्वथा त्याग देने में ही समझदारी है।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

१६. आधुनिक ज्योतिष की पुस्तकों में बहुत सारे शकुन, अपशकुन, बहुत सारी बातों के शुभ-अशुभ फल, दिशाशूल आदि के प्रकरण मिलते हैं, जो सब मन-गढ़न्त हैं। उन पर यकीन करना स्वयं अपने लिये पग-पग पर बाधायें उत्पन्न कर लेना जैसा है।

अन्तिम निवेदन

यदि आप एक जागरूक नागरिक हैं, तो जो कुछ भी करें, सोच-विचार कर बुद्धि-पूर्वक करें। लकीर का फ़कीर बने रहने में, अन्ध विश्वासों से जकड़े रहने में, तथा रुद्धियों से चिपटे रहने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।

यदि आप ज्योतिषी हैं, तो प्राचीन ज्योतिष के ग्रन्थों का अध्ययन कर खगोल शास्त्र के विज्ञान और उसकी प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दें। मानव चन्द्रमा पर हो आया है। विकसित प्रौद्योगिकी के आधार पर पृथिवी से अरबों किलोमीटर दूर तारों तथा ग्रहों एवं उपग्रहों के विषय में सूचना और जानकारी अब मुश्किल नहीं रह गई है। पृथिवी के निकट जो मंगल एवं शुक्र ग्रह हैं, वहाँ मनुष्यों के जाने की पूरी तैयारी है। आप निश्चित जानिये कि अगले कुछ ही वर्षों में मानव समस्त नव ग्रहों की यात्रा कर चुका होगा। उस समय हर ग्रह और उपग्रह के विषय में पर्याप्त जानकारी स्कूली बच्चों तक को होगी। आप कब तक भय, भ्रान्ति और आशंका पैदा करके तथाकथित फलित ज्योतिष द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाते रहेंगे। आपको नर तन मिला है अभ्युदय और निःश्रेयसः की सिद्धि के लिये, न कि लोगों को ठगने के लिये। आप अपना लोक और परलोक सुधारने का यत्न कीजिये जिससे अन्य लोग आपके जीवन से प्रेरणा ले सकें। वरना जो कुछ ज्योतिष के नाम पर आप कर वा करवा रहे हैं। उससे 'आपका भविष्य घोर अन्धकारमय है।'

अन्धन्तम्: प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते ॥ — यजुः० ४०.१२

जो लोग अविद्या में ही रत रहते हैं, वे गहन अन्धकार में जाते हैं। यह वेद का वचन है, इसको गम्भीरता से लें।

निवेदक : महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

आर्य संन्यासी

वानप्रस्थ आश्रम, कक्ष-१, आर्यसमाज,